

जनजातीय संवाद / झाबुआ संवाद

परम्परा और उद्यम के बीच
संवाद का एक मंच



हमारी समृद्ध विरासत और आधुनिक अवसर के बीच की दूरी



समस्या: आधुनिक आर्थिक और शैक्षणिक ढाँचों में साझा संवाद के संगठित मंच का अभाव।



प्रकृति के साथ संतुलित जीवन और अनूठी परंपराएँ (भील, भिलाला और अन्य समुदाय)।

स्थानीय युवाओं, शोधकर्ताओं और उद्यमियों के पास अपार विचार।

झाबुआ संवाद: एक सहयोगी मंच की परिकल्पना

❖ यह किसी एक संस्था का कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक साझा मंच (Collaborative Platform) है।

❖ दो दिवसीय महाआयोजन।





केंद्रीय विषय: परम्परा और उद्यम



प्रासंगिकता

जनजातीय परम्पराओं में निहित ज्ञान आधुनिक समय में कैसे प्रासंगिक हो सकता है?



विकास

स्थानीय संसाधनों और कौशल के आधार पर नए उद्यम कैसे विकसित किए जा सकते हैं?



प्रेरणा

युवाओं को अपने क्षेत्र में अवसर खोजने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए?

मंच के पाँच मुख्य उद्देश्य



1. सांस्कृतिक संवाद:
परम्पराओं और कला
का सम्मानपूर्वक
प्रस्तुतीकरण।



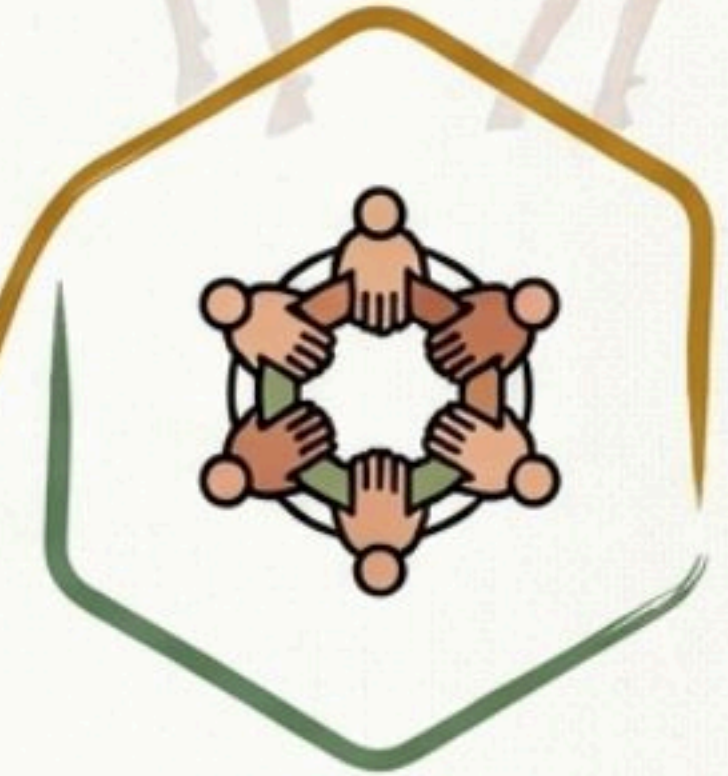
**2. युवा
सशक्तिकरण:**
विद्यार्थियों को विचार
प्रस्तुत करने का
अवसर।



3. स्थानीय उद्यम:
संसाधनों और
परम्परागत ज्ञान पर
आधारित उद्यमों को
प्रोत्साहन।



**4. शोध और ज्ञान
विनिमय:**
शोधकर्ताओं के लिए
एक साझा मंच।



5. सहयोगी नेटवर्क:
संस्थाओं और
कार्यकर्ताओं के बीच
सहयोग।

समय-रेखा: पहले दिन का प्रवाह



उद्घाटन सत्र: अवधारणा और उद्देश्य पर प्रस्तुति।



विषयगत पैनल चर्चा: 'जनजातीय संस्कृति और आधुनिक समाज', 'स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्यम'।



छात्र प्रस्तुति: कॉलेज स्तर - 'झाबुआ में स्थानीय संसाधनों पर संभावित उद्यम'।



सांस्कृतिक संध्या: स्थानीय कलाकारों द्वारा जनजातीय नृत्य और संगीत।

समय-रेखा: दूसरे दिन का प्रवाह

योग सत्र: 

प्रातःकालीन योग सत्र – मन, शरीर और प्रकृति के साथ सामंजस्य।

;

वृक्षारोपण:

गांव के लोगों के साथ सहभागिता।



खुला संवाद:

प्रतिभागियों और वक्ताओं के बीच चर्चा।



पुरस्कार एवं समापन:

छात्र प्रस्तुति और पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान।

सहभागिता: इस पहल से कौन जुड़ेगा?



विश्वविद्यालय और
कॉलेज के विद्यार्थी



स्कूल के विद्यार्थी



शोधकर्ता और शिक्षाविद



सामाजिक संस्थाओं
के प्रतिनिधि



स्थानीय उद्यमी



कलाकार और
सांस्कृतिक समूह

साझेदारी: सहयोग के अवसर और माध्यम

संभावित सहयोगी:

- विश्वविद्यालय
- सामाजिक संस्थाएँ
- शोध संस्थान
- सांस्कृतिक संगठन
- स्थानीय प्रशासन

सहयोग के क्षेत्र:



आयोजन स्थल (Venue)



तकनीकी सहायता (Tech Support)

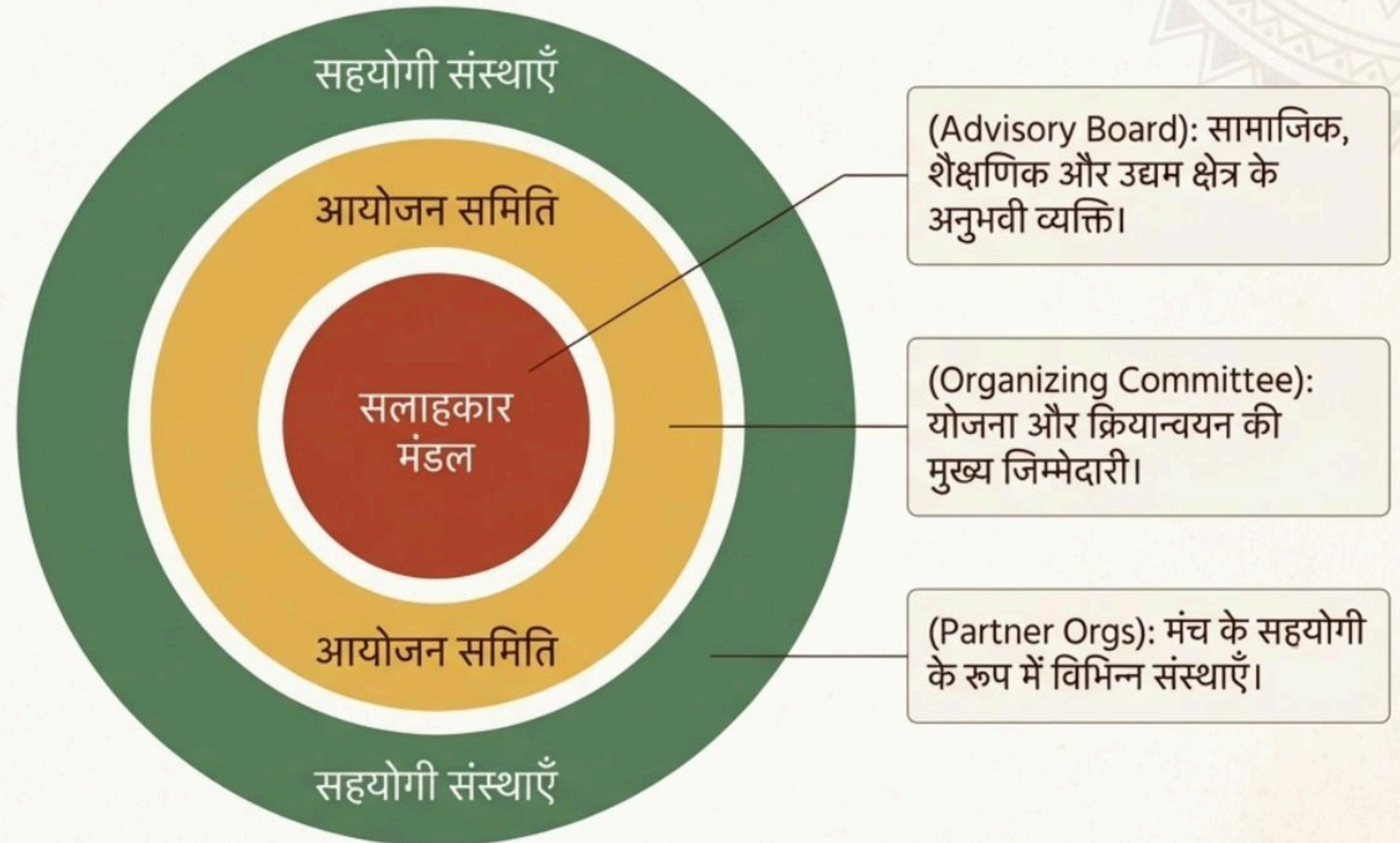


प्रायोजन (Sponsorship)

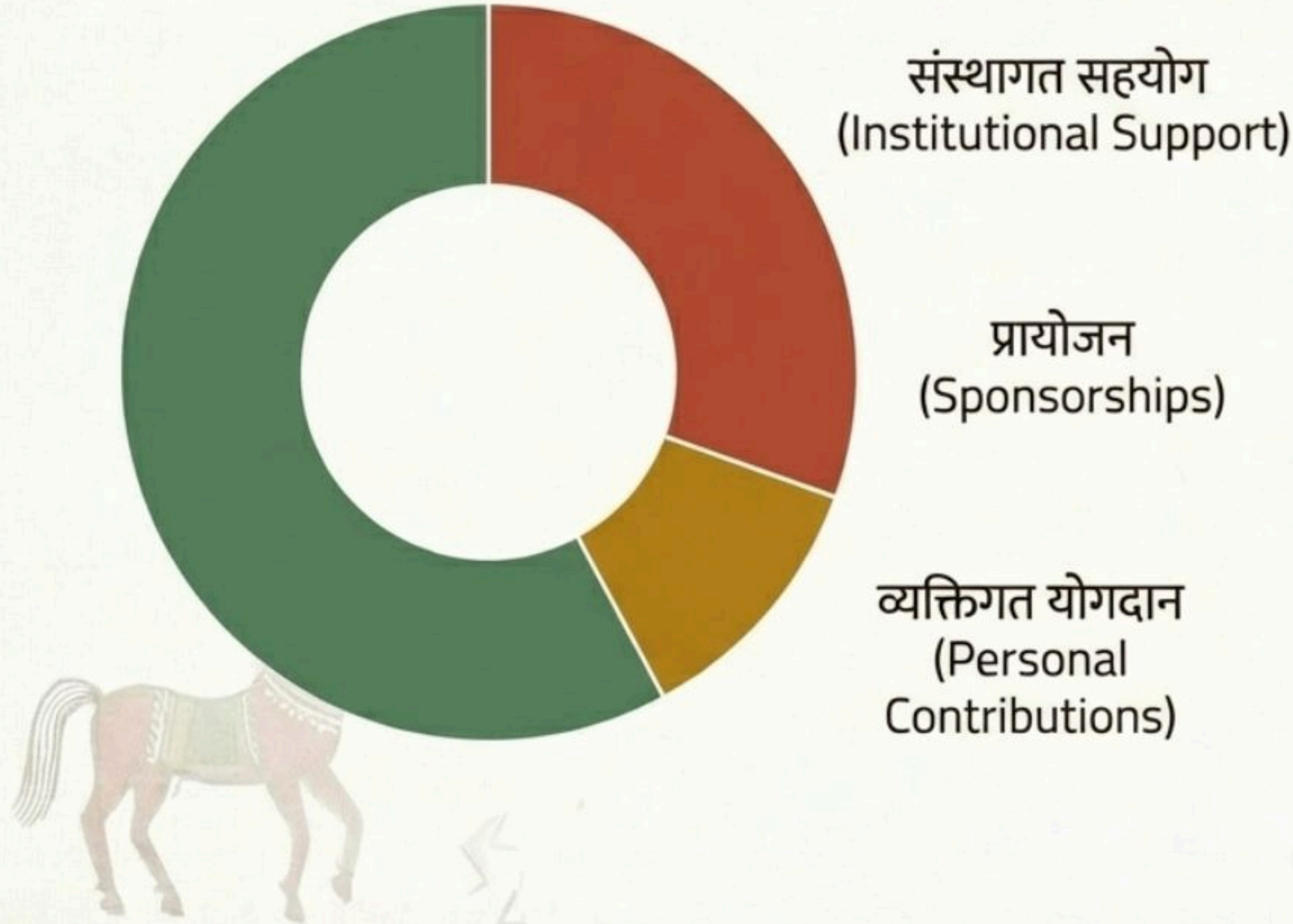


प्रतिभागियों की भागीदारी (Participation)

सुदृढ़ और पारदर्शी आयोजन संरचना



समावेशी वित्तीय व्यवस्था



विशेष नोटः

पंजीकरण शुल्क प्रतीकात्मक
(Token Fee) रखा जाएगा
ताकि अधिक से अधिक युवा
इसमें भाग ले सकें।

दो दिवसीय आयोजन से आगे की दीर्घकालिक दृष्टि

जनजातीय विषयों पर एक स्थायी संवाद मंच की स्थापना।

युवाओं के लिए निरंतर सीखने और प्रस्तुत करने के अवसर।

संस्थाओं के बीच दीर्घकालिक सहयोग का निर्माण।

शोध, उद्यम और सांस्कृतिक संवाद का एक महत्वपूर्ण केंद्र।





संवाद, सीख और सहयोग से एक नए विचार की शुरुआत

- भारत की जनजातीय सभ्यताएँ हमारे परिदृश्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
- उनके अनुभव, ज्ञान और जीवन दृष्टि से आधुनिक समाज बहुत कुछ सीख सकता है।
- 'झाबुआ संवाद' इसी विश्वास के साथ एक प्रामाणिक प्रयास है।

